प्रेरणादायी संचालिका 'प्यारी दादी जी'

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका अर्थात् संस्था की संचालनकर्त्ता, शासनकर्त्ता दादी जी का संचालन कार्य अद्भुत, चमत्कारी, संतुष्टता प्रदान करने वाला, प्रेरणादायी और आश्चर्यचकित करने वाला था। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था की देश-विदेश की 8000 से भी ज़्यादा शाखाओं का बखूबी संचालन किया और उनके उत्तम मार्गदर्शन से दस हज़ार से भी ज़्यादा कन्याओं ने शक्ति स्वरूपा बन अपना जीवन सेवा अर्थ समर्पित किया। दादी जी की विशेषताओं के कुछ पहलू –

1. ममता मूरत माँ – गरीब हो या साहूकार, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, ऊँच जाति का हो या अन्य, जाना हो या अनजाना, सबके प्रति निर्मल पावन गंगा की तरह उनका रूहानी प्यार निरंतर बहता रहा, कभी भेदभाव नहीं देखा।

2. विशाल हृदय – दादी जी का हृदय बड़ा विशाल था। सेवाकेंद्रों को तथा आने वाले सर्व भाई-बहनों को व्यस्त रखा, उनको आगे बढ़ाया, बढ़ने दिया, नये-नये सेवा के प्रयोग किए, उसके लिए हिम्मत-उमंग-उत्साह व प्रेरणाएँ देती रही और सफलता प्राप्त करने के लिए पूरा सहयोग निभाती रही।

3. अपनापन – दादी जी ने प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे पद पोजिशन वाला हो या न हो, चाहे कुछ क्षणों के लिए मिलने आया हो, चाहे मेहमान बनकर अधिक दिन रहने वाला हो, अपनापन दिया। सबको खुश किया, सबको प्यार दिया, सबको मान, सम्मान, सहयोग दिया, समस्या सुलझायी, आंसू पोंछे, मदद की और हरेक के हृदय में 'मां' का स्थान प्राप्त किया।

4. मां के द्वार से कोई खाली नहीं गया – जो भी आया, जिस भी भावना को लेकर आया, उसकी आस पूर्ण हुई। भावना से बढ़कर उसको शक्ति मिली। कभी ज्ञान के खज़ाने से तथा वरदानों से भरे हुए हीरे–रत्न, माणिक-मोती प्राप्त हुए या फिर अस्त्र-शस्त्र के रूप में शक्तियाँ प्राप्त हुईं या फिर गुणों की सुगंध मिली जिससे जीवन महका या फिर मीठे बोल मिले जिन्होंने उनके हृदय को 'दादी मेरी ही है' का अहसास दिलाया।

5. संस्था की आर्थिक परिस्थिति – धन की परिस्थिति इतनी सहजता से सुलझाई कि सारा विश्व हैरान। जब दादी मां से प्रश्न पूछा जाता कि इतनी धनराशि कहां से आती है, प्यारी मीठी हर्षितमुख दादी जी, मीठा-मंद मुस्कराके उत्तर देती, अरे दरियालाल का कुआँ है, उसमें से निकलता रहता है। रोज़ का 10 पैसा, फिर 50 पैसा, फिर 1 रुपया – ऐसे सारे विश्व के ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ दें तो आप ही सोचो, क्या होगा? रोज़ की कितनी धनराशि। सहज बाबा करा देता, और इस प्रकार आर्थिक परिस्थिति को भी सुलझाने में सदा प्रवीण रही।

6. न्यायपूर्ण निर्णय – कैसी भी समस्या चाहे व्यक्तिगत हो, पारिवारिक हो, सामाजिक हो, राजकीय हो, दादी जी का समाधान सदा न्यायपूर्ण और संतुष्टताप्रद रहा। ❑

खुशी तब कम होती है जब मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष का भाव उत्पन्न होता है। ज्ञानवान मनुष्य को चाहिए, जब उसके मन में ऐसा भाव उत्पन्न हो, तब सोचे कि यह तो मेरी गिरावट की निशानी है। महानता का चिह्न तो परोपकार, हृदय की विशालता तथा दूसरे के प्रति सद्भावना है।